नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी "बी"
महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर
स्थापित २००५ ई.
7897475917, 9794299451
Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

पत्रांक : ..... दिनांक : 16.08.2019

प्रकाशनार्थ

महाराणा प्रताप पी0जी0 कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर में **'युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की 50वीं एवं राष्ट्रसन्त महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की 05 वीं पुण्यतिथि** के पावन स्मृति में आयोजित सप्त दिवसीय व्याख्यान माला के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के **कुलपाति प्रो0 विजय कृष्ण सिंह** ने कहा कि महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज का विराट व्यक्तित्व एक ऐसे मनीषी का भव्य स्वरूप है जिसमें धर्म एवं राष्ट्र का एक साथ साक्षात् दर्शन होता है। गोरक्षपीठ की यशस्वी परम्परा में गोरक्षपीठ के पीठाधीश्वरों ने एकान्तिक साधना के स्थान पर लोक कल्याण के माध्यम से राष्ट्र निर्माण का मार्ग चुना। महन्त दिग्विजयनाथ जी ने भारतीय राजनीति को एक नयी दिशा दी; कथित धर्मनिरपेक्ष राजनीति की दूषित अवधारणा को नकारते हुए धर्मनिष्ठ राजनीति की प्रतिष्ठा की तो वही इस परम्परा को आगे बढ़ाते हुए महन्त अवेद्यनाथ जी ने भारतीय समाज में 'जातिवाद' की विषबेलि को समूल उखाड़ फेंका और बिना किसी की परवाह के समरसता का मूलमंत्र देकर भारतीय धर्म गुरुओं का नेतृत्व किया तथा **छुआछूत जैसी कुरीतियों के विरूद्व जन–जागरण अभियान छोड़कर हिन्दू समाज को एकता का पाठ पढ़ाया।** महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने अपने–अपने युग के एक ऐसे महानायक है जिन्होंने राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक, शैक्षिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्रों में एक साथ पुनर्जागरण का उद्घोष किया। भारत के बीसवीं सदी के उत्तरार्द्व के तथा इक्कीसंवी सदी के प्रारम्भिक दशकों में वे जाज्वल्यमान नक्षत्र है। वे ऐसे महायोगी हैं जिनका अन्तःकरण समता में स्थित है, जिन्होंने इस जीवित अवस्था में ही सबको जीत लिया। उनके स्मृति में आयोजित यह सप्तदिवसीय व्याख्यान माला भारत के महान सांस्कृतिक परम्परा को नई पीढ़ी तक पहुँचाने में सफल होगी।

उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता करते हुए बीरबहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय के **पूर्व कुलपति प्रो0 उदय प्रताप सिंह** ने कहा कि भारत की गौरवशाली इतिहास दुनिया के सभी देशो की तुलना मे अत्यन्त व्यापक है। एक ओर देश को स्वतंत्र कराने में तथा दूसरी ओर राष्ट्र को सशक्त बनाने में युगपुरुष महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं राष्ट्रसंत महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज का नाम सर्वकालिक एवं सर्वदेशिक है। महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने शक्तिशाली राष्ट्र के निर्माण में शिक्षित एवं सजग समाज का महत्वपूर्ण योगदान है। पूर्वांचल में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के माध्यम से शहर से लेकर ग्रामीण शिक्षा की जो लौ गोरक्षपीठ के द्वारा प्रज्ज्वलित की गई है वह आज भी निरन्तर प्रवाहमान है। शिक्षा के इस प्रवाह को महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने विराट भव्य स्वरूप प्रदान किया। उन्होंने भारतीय राजनीति को एक नयी दिशा दी; कथित धर्मनिरपेक्ष राजनीति की दूषित अवधारणा को नकारते हुए धर्मनिष्ठ राजनीति की प्रतिष्ठा की। शिक्षा और स्वास्थ्य को जन–सेवा का आधार बनाकर 'परहित सरिस धर्म नहिं भाई' उक्ति को चरितार्थ किया। श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति आन्दोलन के बहाने पंथो के नाम पर बैंठे धर्मगुरूओ को एक में एक साथ लाकर राष्ट्रीय स्वाभिमान तथा सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का शंखवाद किया।

व्याख्यान–माला की प्रस्ताविकी रखते हुए **प्राचार्य डॉ0 प्रदीप राव** ने कहा कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के उद्देश्यों के अनुरूप संचालित महाराणाा प्रताप पी0जी0 कालेज जंगल धूसड़ के प्रयत्न महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के संस्थापक युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं महाराणा प्रताप महाविद्यालय के संस्थापक के संस्थापक राष्ट्रसन्त महन्त अवेद्यनाथ

जी महाराज को वास्तविक श्रद्धांजलि है। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के संस्थापक और उसके विराट स्वरूप देने वाले गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी एवं महन्त अवेद्यनाथ जी के विचार दर्शन के अनुकूल सप्ताह भर भारतीय संस्कृति एवं लोकमंगल पर आधारित विभिन्न विषय पर भारत वर्ष के प्रतिष्ठित ख्यातिलब्ध विद्वानों का मार्ग दर्शन हमारी संस्था को प्राप्त होगा। प्राचार्य ने सभी अतिथि का स्वागत एवं आभार ज्ञापित किया।

इससे पूर्व माँ सरस्वती, गुरु श्रीगोरक्षनाथ एवं भारत माता के चित्र के सम्मुख दीप प्रज्ज्वलन एवं महाविद्यालय की छात्राएं ललिता गुप्ता, श्वेता गौड़, अम्बिका, मनीषा वर्मा ने सरस्वती वन्दना तथा एकल गीत ज्योति सिंह राजपूत ने प्रस्तुत किया। उद्घाटन कार्यक्रम का समापन वन्देमातरम् के साथ हुआ। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 अविनाश प्रताप सिंह ने गया। समारोह मे विशेष रूप से दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के प्रो0 आर0डी0 राय, प्रो0 राजेश सिंह, डॉ0 केशव सिंह, डॉ0 वी0एन0 सिंह, निर्भय सिंह महाराणा प्रताप इण्टर कालेज के दीपक शाही, प्रो0 महेश शरण सहित महाविद्यालय के शिक्षक, कर्मचारी तथा विद्यार्थी उपस्थित रहे।

सप्तदिवसीय व्याख्यान माला के उद्घाटन समारोह में मुख्य वक्ता **रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन, नई दिल्ली** के वरिष्ठ वैज्ञानिक **डॉ0 अनन्त नारायण भट्ट** ने **"आयुर्वेद एज मार्डन मेडिसिन : प्रास्पेक्ट्स, लिमिटेशन्स एण्ड चैलेंजेज"** विषय पर विशिष्ट व्याख्यान देते हुए कहा कि **आयुर्वेद पृथ्वी पर जीवनदायनी के समान है**। आयुर्वेद के रूप में प्रकृति ने मानव के लिए दीर्घायु का वरदान दिया है। आयुर्वेद प्राचीनकाल से ही भारत की यशस्वी परम्परा में रची बसी है। मनुष्य के शरीर में बीमारियों से लड़ने के लिए स्वयं प्रतिरोधक क्षमता विद्मान रहती है। आयुर्वेद उन क्षमताओं को न केवल निखारता है बल्कि उसे व्यापक स्वरूप प्रदान करता है। आज के आपा–धापी वाली जीवन शैली और असंतुलित आचार व्यवहार के कारण जिस प्रकार से मनुष्य का जीवन पर संकट गहराता जा रहा है और उससे निपटने के लिए जिस प्रकार से एण्टीबायोटिक इत्यादि दवाईयों का प्रयोग बढ़ रहा है उसका परिणाम भयावह है। ऐसे में आज सभी प्रमुख चिकित्सा पद्धतियाँ आर्युदिक पद्धति को अपनाने की तरफ आगे बढ़ी है। यहाँ तक की एलोपैथी पद्धति भी आर्युवेद के सिद्धान्त को अपनाकर दवाईयां निर्मित कर रहा है। भारतीय परम्परा में पंच तत्व पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश का समन्वय एवं संतुलन मानव के स्वाथ्य के लिए अपरिहार्य माना गया है। अनेक शोध और अनुसंधानों द्वारा इन पंचतत्वों के संतुलन महत्व को भी स्वीकार किया गया है। इस कारण आज प्रत्येक मनुष्य के लिए आर्युवद के विज्ञान को समझना अत्यन्त आवश्यक है। शिक्षण संस्थाओं में भी आयुर्वेद की महत्ता एवं चिकित्सा पद्धति को पाठ्यक्रम के रूप में शामिल किया जाना असम्भावी है।

(डॉ0 राजेश शुक्ला)
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी